मुक्त प्रतियोगी बनने की सलाह दी जाती है। उनका मानना है कि इतिहास नए समाज की नयी जरूरतों को पूरा नहीं कर रहा। दीक्षित महोदय के अनुसार पुरानी इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में कुछ अल्पसंख्यक समुदायों के बारे में आपत्तिजनक वाक्य हैं और बहुसंख्यक समुदाय के भी कुछ लोगों ने इन पुस्तकों की अन्तर्वस्तु पर आपत्ति की है। यह बहुसंख्यक समुदाय कौन-सा है और उनकी भावनाओं का ठेका किन लोगों ने ले रखा है यह बताने की ज़रूरत नहीं है।

इतिहास के इस विकृतिकरण अभियान के तहत एन.सी.ई.आर.टी. कमेटियों से कुछ इतिहासकारों को बाहर कर दिया गया है। तर्क यह दिया गया है कि कुछ नए चेहरों को लाया जाएगा। लेकिन कारण नयापन मात्र नहीं है। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक जे.एस.राजपूत के आशीर्वाद के साथ बनी एक्सपर्ट कमेटी में शामिल किए गए चेहरे ज्ञात रूप में हाफ पैण्ट, लाठी, काली टोपी वाले सिपाही हैं। इनमें मुख्य हैं एस.पी.गुप्ता, के.एस.लाल, लोकेश चंद्रा, और जी.सी.पाण्डे। इन नामों को तो शायद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दफ्तर के लोग भी न जानते हों लेकिन अब यह केसरिया ब्रिगेड के सिपाही ही तय करेंगे कि हम क्या पढ़ें और क्या न पढ़ें। दीक्षित महोदय का मानना है कि वह इतिहास में विवादास्पद मुद्दे पर कुछ नहीं कहेंगे। जैसे वह यह नहीं कहेंगे कि आर्य मध्य एशिया से आए थे और उन्होंने यहां के मूल निवासियों को भगा दिया था। इस तरह संघ के "बुद्धिजीवी" तथ्यों के साथ बलात्कार की योजना बना चुके हैं। दीक्षित की एक अन्य साम्प्रदायिक विद्वेष से भरे कथन पर गौर करें: *"जो भी कुतुब मीनार सैर करने जाता है वह इसके बारे में जानने के लिए उत्सुक होता है। लेकिन कुतुब मीनार के ही दूसरे ओर कुत्वत उल इस्लाम मस्जिद है। उसके बारे में एक प्रश्न है। आप पढ़ते हैं कि यह मस्जिद 37 हिन्दू और जैन मंदिरों के मलबे पर बनी थी। यह इतिहास निर्विवादित है। मुझे नहीं लगता कि हमें इसकी उपेक्षा करनी चाहिए।"* यह बताने के लिए दीक्षित के दिमाग में बहुत खलबली मची हुई है, इससे राष्ट्र विभाजित नहीं होगा लेकिन यह बताने से कि आर्य मूलत: भारतीय प्रायद्वीप के नहीं थे, राष्ट्र विभाजित हो जाएगा! दीक्षित के पहले

(शेष पृष्ठ 34 पर)

प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. आर.एस.शर्मा की पाठ्य-पुस्तक के साथ छेड़छाड़: भगवा ब्रिगेड का नया कारनामा

भाजपा के सत्तासीन होने के बाद से लगातार प्रसिद्ध और माने हुए इतिहासकारों की पुस्तकों को या तो वापस लिया जा रहा है या उनके साथ बदसुलूकी की जा रही है। नवीनतम उदाहरण है प्राचीन और मध्यकालीन भारत के श्रेष्ठतम इतिहासकारों में से एक प्रो. रामशरण शर्मा द्वारा लिखित कक्षा ग्यारह की पाठ्य-पुस्तक के साथ बदसुलूकी। इससे पहले **पान्चजन्य** के नियमित लेखक अतुल रावत को इतिहास का पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए सलाहकार नियुक्त किया गया था।

इस बदसुलूकी की वजह यह बतायी गयी कि **प्राचीन भारत** नामक ग्यारहवी कक्षा की पुस्तक में प्रो. शर्मा ने तीर्थंकरों की एतिहासिकता पर संदेह व्यक्त किया है जिससे जैन सम्प्रदाय की भावनाओं को "ठेस" पहुंची है। यह पुस्तक पहली बार 1977 में छपी थी, इसके बाद 1980 में इसका संशोधित संस्करण प्रकाशित हुआ। एक नया संस्करण 1990 में छपा। तबसे कई बार इसका पुन: मुद्रण हुआ। इसके बाद भी भगवा ब्रिगेड के समर्पित सिपाहियों, एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक जे. एस.राजपूत और सामाजिक विज्ञान और मानविकी के नए विभागाध्यक्ष आर.के. दीक्षित संतुष्ट नहीं हैं। उन्होंने इस पुस्तक के दसवें अध्याय, जो जैन धर्म और बौद्ध धर्म पर केन्द्रित है, आपत्ति की है। इसमें प्रो. शर्मा ने अनुत्तरित तर्कों सहित अपने संदेह को जायज साबित किया है। प्रो. शर्मा ने लिखा है कि अगर महावीर जैन को चौबीसवां तीर्थंकर मान लिया जाए तो जैन धर्म की उत्पत्ति का समय नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में कहीं माना जाएगा लेकिन उस समय के सभी धार्मिक गुरु गंगा के मैदानों के मध्यवर्ती इलाके में पैदा हुए थे और यह इलाका छठीं शताब्दी ईसा पूर्व से पहले बिल्कुल निर्जन था। प्रो. शर्मा का मानना है कि तीर्थंकरों का मिथ शायद इसलिए खड़ा किया गया कि जैन धर्म की प्राचीनता बढ़ जाए। कुछ लोगों को पुस्तक के इस हिस्से पर कथित आपत्ति के आधार पर पहले इसमें संशोधन प्रस्तावित किया गया। इस बदले हुए संस्करण मे बात सारी वही रखी गयी लेकिन सभी आपत्तिजनक वाक्यों के पहले यह वाक्यांश चस्पां कर दिया गया: "जैन धर्म के अनुयायियों के अनुसार"। इसमें तथ्यों की ऐतिहासिकता बरकरार थी।

लेकिन यह तो था प्रस्तावित संशोधन। फरवरी, 2001 में जो नया संस्करण आया उसमें भगवा ब्रिगेड ने अपनी कारस्तानी कर ही दी। इसमें संशोधन का वह हिस्सा, जिसमें पुरातात्विक प्रमाणों के साथ महावीर के जैन धर्म के संस्थापक होने की संभावनाओं पर जोर दिया गया है, मिटा दिया गया है। इसी प्रकार किताब का एक और हिस्सा संशोधित किया गया। भुवनेश्वर में सामाजिक विज्ञान और मानविकी विभाग में रीडर प्रीतीश आचार्य ने इन कारनामों का विरोध किया और जब उन्होंने और संशोधन करने से इंकार कर दिया तो उनका तबादला कर दिया गया।

इस शुद्धीकरण मुहिम के कई उदाहरण दिए जा सकते हैं। मध्यकालीन भारत पर सातवीं कक्षा की प्रो. रोमिला थापर की पाठ्य पुस्तक और इसी काल पर प्रो. सतीश चन्द्रा द्वारा लिखी गई पाठ्य पुस्तकों पर भी आपत्ति दर्ज करके वही सुलूक करने की तैयारी कर ली गई है।

● शिशिर